International Journal of Information Movement Vol.4 Issue VI (October 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 12-22

चन्द्रकांते देवताले की रचनाधर्मिता में सांस्कृतिक परिदृष्य

डॉ. ऋतु
एसोसिएट प्रोफेसर
डी.ए.वी.(पी.जी) कॉलेज,
करनाल, हरियाणा
Email: kaliaritu1975@gmail.com

भूमिका

समकालीन कविता के चर्चित प्रमुख हस्ताक्षर कवि चन्द्रकांत देवताले ने अपने काव्य संग्रह की कविताओं में भारतीय समाज की संस्कृति और उस पर पड़ने वाले पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है। चूँकि चन्द्रकांत ग्रामीण जीवन से जुड़े कवि हैं। इन्होंने अपनी कविताओं में रीति–रिवाजों, फैले अंध–विश्वासों और धार्मिक आडम्बरों का वर्णन करने के साथ–साथ समय–समय पर आने वाले तीज–त्योहारों एवं मेलों से जुड़ी लोगों की भावनाओं का वर्णन किया है। धर्म के उच्च आदर्शों में गिरावट आने से समाज में फैली अनैतिकता और मूल्यहीनता का दृश्य दिखलाकर धर्म के ठेकेदारों द्वारा साधारण जनता को अंधविश्वासों और रूढ़ियों में फँसने की युक्ति से बचने के लिए और उनसे लूटने से बचने के प्रति सचेत करने का प्रयास किया है। अतः देवताले की कविताओं में देश की संस्कृति का वर्णन इस प्रकार झलकता है।

मुख्य शब्द : वेशभूषा, उत्सव, पर्व, धार्मिक विश्वास, संस्कृति स्वायत्तता

1.0 लोक जीवन का चित्राण

लोक जीवन से अभिप्राय किसी निश्चित भू–भाग पर निवास करने वाले मानव जीवन के समूह की ऐसी सामाजिक प्रणाली है जिसकी अपनी एक संस्कृति होती है। जो नागर सभ्यता से विभिन्न संस्कृति स्वायत्तता रखती है, जिस कारण यह अपनी स्थानीय विशेषताओं और परिस्थितियों के अनुकूल अपनी जीवन शैली निर्धारित करती है। लोक जीवन में किसी निश्चित क्षेत्रा में निवास करने वाले मानव जीवन के समूह की जीवन प्रणाली, रीति–रिवाज, खान–पान, वेशभूषा, उत्सव, पर्व, धार्मिक विश्वास, आजीविका के साधन और भाषा रूप में समानता होती है। अतः देवताले की कविताओं में लोक जीवन की निम्नलिखित विशेषताओं को सरलता से देखा जा सकता है–

1.1 खान–पान

खान–पान संस्कृति का एक अंग है। प्रत्येक क्षेत्रा की लोक संस्कृति उस क्षेत्रा की जलवायु, वातावरण और भौगोलिक स्थितियाँ निश्चित करती हैं। इसलिए लोक जीवन में खान–पान को क्षेत्र की उपलब्धियाँ निर्धारित करती हैं। कवि देवताले ने मध्य प्रदेश की राजधानी 'भोपाल' के लोगों के खान–पान का वर्णन 'साँप सीढ़ी का खेल'नामक कविता में किया है। चूँकि मध्य प्रदेश में ज्वार की खेती और चने की फसल भरपूर मात्राा में उपजाई जाती है। ज्वार को आग में भूनकर फिर उसको पीसकर पानी में चीनी मिलाकर घोल तैयार किया जाता है जिसको 'सत्तू' नाम दिया जाता है। गर्मियों में जुआर का सत्तू ठण्डा ही नहीं बल्कि मनुष्य को मानसिक रूप से शांत भी करता है। कवि ने सत्तू के बारे में बताया है–μ

"चने चबाता या जुआर की धानी फाँकता
सत्तू के बारे में सोचता
कभी पेड़ से उतरकर
तो कभी नदी से नहाकर आया हुआ।"1

'प्याज' इनके खाने में मुख्य रूप से होता है। सब्जी न होने पर भी प्याज के साथ रोटी खाने में आदिवासी मनुष्य अपनी शान समझते हैं। इनके लिए तो 'प्याज' डॉक्टर के समान है जो ग्रीष्म ऋतु में हैजा घातक बीमारी से बचाता है। 'प्याज के विषय में' नामक कविता में कवि प्याज के गुण के बारे में बताते हैं–μ

"मैं भी मुरीद बचपन से ही प्याज का
जब–तब सुनता रहता था
अम्मा जी–बाबूजी के मुँह से
गरीबों के घर में मौजूद डॉक्टर है प्याज
सचमुच धरती की सृजनशीलता का
जमीन पर झुका करिश्मा है प्याज़।"2

गाँवों में शीतीत किए हुए पेय जल के स्थान पर आज भी गाँववासी कुँओं से जल निकालकर उसका उपयोग करते हैं और वातानुकूलित की बजाय आम के बगीचों में आम के पेड़ों की घनी ठण्डी छाया का लुत्फ उठाते हैं। 'मैं कौन खास' कविता स्पष्ट करती है–µ

"यह रहा कुँए का ठण्डा पानी अमराई के नीचे
और यह गमछा बिज्जू मामा की
अद्वितीय सही प्यास तुम्हारी भाई
फिर भी ठण्डा पानी पीओ
और पोंछ लो आँसू इस गमछे से ही।"3

1.2 रहन–सहन

भारत विभिन्नताओं वाला देश है जिसमें उन्नतीस राज्य और प्रत्येक राज्य के बहुत से जिले व कसबे हैं। प्रत्येक राज्य और जिलों के लोगों के रहन–सहन में भी काफी विभिन्नताएँ पाई जाती हैं जिससे भारत की संस्कृति की गरिमा का ज्ञात होता है। रहन–सहन के लिए आवास की अनिवार्यता होती है जो समाज के प्रत्येक स्तर के व्यक्ति की आवश्यकता है। जहाँ नगरों और महानगरों में गगनचुंबी अट्टालिकाएँ संभव हैं वहीं ग्रामीण क्षेत्राों में झुग्गी–झोंपड़ी और सामान्य आवास ही होते हैं जिनमें रहकर मनुष्य खुशी से अपनी दिनचर्या बिताते हैं। 'साँप–सीढ़ी का खेल' कविता में कवि चन्द्रकांत देवताले ने भारत में रहने वाले उन ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रा के मनुष्यों के आवासीय मकानों के बारे में अवगत कराना चाहा है जो शहरों की अपेक्षा गाँवों में आज भी कच्चे हैं, उनको चिकनी मिट्टी से लीप कर उन पर सफेदी पोची जाती है, सजावट के लिए रंग–बिरंगे कागजों को काटकर रस्सी रूपी मालाएँ बनाकर घर की दीवारों पर सजाई जाती हैं और उन पर हाथ से हाथी–घोड़े, राजा, फूल, इत्यादि की चित्राकला की जाती है। विशेष मौकों पर तो इनके घर बहुत सुंदर दिखते हुए संध्या गीतों की गूँज से गूँजते हैंµ

"गोबर से दीवारों पर
किला–कोट परकोट
सूरज–चाँद–सितारे
राजा–रानी–बाग–बगीचे
हाथी–घोड़े
नौकर–चाकर
और सजाया था जिसे
गुलबास–गुलतेवड़ी की पँखुड़ियों
पत्रियों और रंगीन कागज से
और एक गीत संझा के दरबार का
गूंज रहा था।"4

शौचालय के विषय में कवि ने बताना चाहा है कि यद्यपि भारत सरकार द्वारा शहरों में शौचालय का उचित प्रबंध किया गया है, लेकिन गाँवों में आज भी झुग्गी–झोंपड़ियों में निवास करने वाले मनुष्य बाहर खेतों में या जंगलों में शौचालय करने जाते हैं। 'अँधेरिया मोड' नामक कविता स्पष्ट करती है–µ

"अँधेरिया मोड़ के पास
मैदाननुमा भी था झाड़–झंखाड़ से पटा
निपटने आते थे
झुग्गी–झोंपड़ियों के बाशिन्दे जहाँ।"5

भोपाल के लोक जीवन के बारे में कविवर कविताओं के माध्यम से उनके रहन–सहन के अतिरिक्त उनमें समाई एक दूसरे के लिए जीने की भावनाओं को भी प्रकट करते हैं। ये सादगी से जीवन व्यतीत करते मनुष्य खान–पान में प्राकृतिक स्त्रोतों का तो उपयोग करते ही हैं साथ ही साथ इनमें अपना दूसरे का दुःख समझने,
समूह में मिलकर ईश्वर से दुःख का निवारण करने की कामना करने का भाव समाया है। जिसका वर्णन 'साँप–सीढ़ी का खेल' कविता इस प्रकार प्रस्तुत करती हैµ

"वह जानता है वह समय था एक साथ
फूलों की महक
और बिच्छुओं के छिपे डंकों के
पवित्रा अंधेरे का
जिसमें नदियों के जी भर उजाले थे
हवा पर कोई बन्दिश नहीं थी
प्यास की ओक में झरने का पानी था
पहाड़ को चूमकर आया गुनगुनाता हुआ
और उसी वक्त भूख के पेट पर
ईश्वर जर्राह की तरह झुका हुआ था
और कराहों की लपटें

प्रार्थनाओं के फूलों से सजाई जा रही थीं
और सरहदों, अहातों, कोठियों
बागड़ों और झोंपड़ी भर अँधेरे का
खूँखार बँटवारा था।"6

इस प्रकार 'कठफोड़वा' और 'सिर्फ तारीखें नहीं बदला करती समय' नामक कविताएँ पूर्णतः भारतीय लोगों के रहन–सहन को प्रत्यक्ष रूप से उजागर करती हैं। वेश–भूषा किसी भी स्थान की वेशभूषा उस स्थान विशेष की जलवायु, उपलब्ध साधन, परम्परा और लोकरूचि पर निर्भर करती है। इन सब तत्वों के कारण वेशभूषा द्वारा ही किसी देश या क्षेत्रा की लोक संस्कृति से परिचित हुआ जा सकता है। चन्द्रकांत देवताले की कविताओं में क्षेत्राीय वेशभूषा का चित्राण अनेक संदर्भों में किया गया है। गाँव की औरतों तथा कुँवारी लड़कियों की वेशभूषा का वर्णन 'बालम ककड़ी बेचने वाली कविता करती हैं जो हाथों में चाँदी के कड़े, पैरों में पुश्तैनी चमक के साथ मोटी पाजेब और घाघरा–लुगड़ी पहने अपनी दिनचर्या में इस प्रकार मशगूल रहती हैं–µ

"सड़क नापतीं बाजना वाली
चाँदी के कड़े जरूर कीचड़ सने
पाँवों में पुश्तैनी चमक के साथ
समुद्र के किनारे पहाड़ों पर
बस्तर के शाल–वनों की छाया में।"7

गाँव के पुरुषों की वेशभूषा के संदर्भ में कवि बताते हैं कि अपनी पौशाक के ऊपर ये गमछा जरूर रखते हैं जो कंधे पर डाला होता है। 'मैं कौन खास' कविता जिसको सिद्ध करती है–µ

"कुएँ का ठण्डा पानी अमराई के नीचे
और यह गमछा बिज्जू मामा का।"8

इस प्रकार देवताले की कविताएँ लोक जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रित करते हुए उनकी वेशभूषा का सुंदर रेखांकन भी करती हैं।

1.3 तीज–त्योहार

तीज–त्योहार भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग हैं जिनके माध्यम से भारतवासी अपनी धार्मिक आस्था और विश्वास का परिचय देते हैं। कवि देवताले ने 'कठफोड़वा' नामक कविता में गाँवों में सावन महीने के त्योहार का दृश्य अंकित किया है। तीज का त्योहार मनाने के लिए गाँव की औरतें आम के बगीचे में एकत्रा होकर सावन के गीत गाती हैं और अपने आंतरिक उल्लास को प्रकट करती हैं–µ

"सुन्न सिखर पर बैठे साई
काशी मामा की अमराई में
जहाँ गोट करने–गाने गीत सावन के
जुड़ती थी गांव भर की औरतें।"9

सर्द ऋतु के जनवरी महीने में होने वाली बारिश के विषय में ग्रामवासियों की विचारधारा और उनकी लोक भाषा का वर्णन 'जनवरी में बारिश' नामक कविता में कवि ने इस प्रकार किया है–µ

"जनवरी की दोपहर
और बारिश हो रही है
जाड़े के दिनों में बारिश होती है
तो उसे मावठा कहते हैं हमारे घरों में।"10

इस प्रकार देवताले ने ग्राम्य संस्कृति में प्रचलित तीज–त्योहारों की सूक्ष्मता को पहचानकर उसके आयाम को प्रभावपूर्ण ढंग से उद्घाटित किया है।

1.4 लोकगीत

प्राचीन काल से ही भारतीय लोक संस्कृति में लोकगीतों की अविछिन्न धारा प्रवाहमान रही है। यदि वैदिक काल पर दृष्टिपात की जाए तो उसके ग्रंथों में विवाहादि के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख मिलता है जिसका वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस सशक्त उदाहरण हैं। इसी प्रकार आज भी लोकगीत लोक संस्कृति के महत्त्वपूर्ण घटक हैं जो उत्सवों, पर्व, संस्कारों, त्योहारों, ऋतओं आदि के सुअवसर पर गाए जाते हैं। 'चकमक पत्थर' नामक कविता में कवि ने प्राचीन काल से आधुनिक काल में लोकगीतों की चली आ रही परम्परा में भारतीय संस्कृति की प्रगाढ़ता को उजागर किया है जिसके कारण भारतीय धरोहर लोकगीतों की गूंज में गूँजती हैµ

"महाकाव्यों में तैरती–उतराती अपनी यह पृथ्वी
धड़कती है जो लोकगीतों की
क्षितिज स्पर्शी लयों से।"11

चूँकि लोकगीतों में लोकजीवन और लोक संस्कृति की मार्मिक अभिव्यक्ति होती है। अनेक पौराणिक कथाओं, घटनाओं, धार्मिक सम्बन्धों इत्यादि से जुड़ी गाथाएँ लोकगीतों में समाहित होती हैं। एक समर्थ साहित्यकार आँचलिक

विवरणों को प्रस्तुत करने के लिए लोकगीतों का मर्मस्पर्शी उपयोग करता है। अतः कहा जा सकता है कि देवताले की कविताओं में लोक जीवन के विभिन्न संस्कारों, उत्सवों, पर्वों, त्योहारों आदि की प्रचुरता के साथ उनके प्रति कवि की गहरी निष्ठा और आत्मीय लगाव का परिचय मिलता है।

1.5 जादू–टोना

लोक जीवन में ऐसा विश्वास किया जाता है कि साधु सन्तों, मौलवियों तथा पीर–पैगम्बरों के पास मायावी मंत्रा तथा शक्तियाँ होती हैं जिसकी सहायता से वे भावी विपत्तियों का तोड़ ढूँढ़कर, उनका समाधान करने की क्षमता रखते हैं। लेकिन वास्तव में वे सब लोगों की आँखों में धूल झोंककर अपना गौरख धंधा चलाते हैं। ताबीज, जन्मकुण्डलियों, गण्डों तथा हवन–यज्ञ करने की आड़ में आम लोगों से पैसे ठगकर अपनी आजीविका कमाते हैं और इसी भूल–भूलैया में फँसकर मनुष्य इसमें उलझता चला जाता है। कवि देवताले ने 'चोंच से पेड़ उगाती चिड़िया' कविता में जादू–टोने करने के यथार्थ दृश्य को इस प्रकार रेखांकित करते हैं–µ

"गोरखधंधा है यह बीहड़ तिलिस्म
गण्डों, ताबीजों, जन्मकुण्डलियों
यज्ञों–हवनों और टोटकों के
धुएँ में खुलता हुआ
कब तक चलता रहेगा यह
क्या इस शताब्दी की अंतिम शाम तक भी
बूढ़ी परछाईयों के चश्मों को
चाकुओं और कैंचियों की भूल भूलैया में
उलझाता हुआ।"12

आज मनुष्य यद्यपि आधुनिक समय और कम्प्यूटरीकरण युग में जी रहा है जिसमें इसकी प्रत्येक समस्या का निवारण एक मिनट में हो जाता है। लेकिन प्राचीन समय में यदि किसी को बुखार का इलाज करवाना होता था तो बरगद की टहनियों पर टोना किया जाता था। इस विश्वास के साथ ही बरगद पर किए गए टोने–टोटके का प्रभाव मनुष्य पर शीघ्र पड़ता है। गाँवों में जैसे ही शाम को अँधेरा होना शुरू होता लोगों द्वारा इसके साथ ही जादू–टोने करना भी शुरू हो जाता। 'चकमक पत्थर' नामक कविता में कवि ने स्पष्ट किया हैµ

"कहाँ था कम्प्यूटर तब
अँधेरे के साथ खौफ घूमता था
बेधड़क बरगद की टहनियों पर
जादू–टोने के फन्दे लटकाता
फिर भी काले बुखार को बाजू पटक
बाघ को चीरते हुए हँसा था जो
भाषाहीन हँसी।"13

इस प्रकार लोक विश्वास में लोगों का जादू–टोने पर अटूट विश्वास दिखाई देता है। जिसको मजबूत बनाने में और पैसे कमाने में आम मनुष्य भी देव मार्ग पर सज रहा है। 'अंत नहीं हो रहा है' कविता के माध्यम से कवि ने चित्रित किया है–

"सिद्ध समान के बड़ नीचे
इतिहास कुष्ठ–गलित अंगों को उतारकर
लेटा है अनाकृत
और अनावृत सब अंग
एक पैसे की भीख के लिए
देव मार्ग पर सज गए हैं।"14

1.6 अंधविश्वास

किसी मान्यता पर बिना किसी तर्क–वितर्क के विश्वास कर आजीवन उसका पीढ़ीगत पालन करना अंधविश्वास कहा जाता है। 'दूसरे शब्दों में किसी बात पर बिना सोचे समझे अंधा विश्वास करना है। अर्चना गौतम के अनुसार, "लोक विश्वास में ऐसे अनेक विश्वास होते हैं जिनकी संगति तर्क के द्वारा बैठाई नहीं जा सकती। लोक मानस इस प्रकार के विश्वासों को अपनी पूर्ववती पीढ़ियों से प्राप्त करता है और बिना किसी तर्क–वितर्क के आजीवन उनका पालन करता रहता है। इस प्रकार के विश्वासों को ही अंधविश्वास की संज्ञा दी जाती है।"15 कवि ने कविताओं में प्राचीन अंध विश्वासों को अनेक संदर्भों में प्रस्तुत किया है जिनमें धार्मिक, रीतिगत, रूढ़िगत अंधविश्वास प्रमुख हैं। देवताले ने कविताओं में इनका वर्णन करके कहीं–कहीं इनका विरोधी भी किया है। भारतीय जीवन में धर्म लोगों की आस्था तथा श्रद्धा का प्रतीक होता है। इसी श्रद्धा तथा आस्था के कारण भारतीय समाज में पितृपक्ष (श्राद्ध) बड़े विश्वास के साथ मनाया जाता है, देवमूर्तियों को मंदिरों में दूध अर्पित किया जाता है और नवरात्रों में देवमूर्तियों पर दीपक प्रज्वलित किए जाते हैं जिसका वर्णन 'देवी– वध' कविता में कवि ने इस प्रकार से किया है–µ

"पितृपक्ष की एकादशी

जब पूरे देश में दूध पीकर अघा रही थीं देवप्रतिमाएँ
और सिर्फ चार दिन बाद जगमगाती नौ रातों के लिए
प्रतिष्ठित होने को थीं देवियाँ।"16

भारतीय संस्कृति में धार्मिक विश्वासों का स्वरूप अत्यधिक वैविध्यपूर्ण होता है। किसी कार्य का शुभारम्भ करने से पूर्व मनुष्य द्वारा आज भी इष्ट देवता के प्रति फूल मालाओं को अर्पित कर दीपकों का प्रज्वलन किया जाता है, वैदिक–मंत्रा–पाठों का उच्चारण किया जाता है ताकि उनके व्यवसाय में बढ़ौतरी और मनोकामनाएँ पूर्ण हो सकें। 'विशेषणों का साँड युद्ध' नामक कविता में कवि ने स्पष्ट किया है–

"समाज सेवियों की आदत और फर्ज़ की तरह
दीपकों का प्रज्वलन और
मंच पर बेशुमार धमकते लोग
फूल मालाओं का अर्पण
वैदिक ऋचाओं–मंत्राों आदि का पाठ।"17

लोगों के अन्तःस्थ बैठे अंधविश्वास का वर्णन 'पवित्रा स्नान के दिन धर्मनिष्ठ मरण' कविता इस प्रकार प्रस्तुत करती है–µ

"वह कूच कर गया
ऐन उस वक्त जब एक लाख गायों के
दान का पुण्य कमाने
गँदले अमृत में डुबकी लगा रहे थे लाखों लोग।"18

इस प्रकार आज भी भारतीय लोक जीवन में अंधविश्वास विभिन्न क्रियाओं, कर्मों, रस्मों, रीति–रिवाजों अथवा सर्वत्रा रूप से फैला हुआ है जिसको बढ़ावा धर्म की आड़ लेकर कृत्रिम वेशभूषा में साधु–संत और पैगम्बर दे रहे हैं। 'गुप्त–दरवाजा और अदालत की सीढ़ी' कविता जिसका प्रमाण देती है–µ

"यह शोभा यात्राा
चाबुक और संस्कृति का पैगाम लेकर
अंकुश की नोक पर हाथी के साथ
बताती हुई ट्रकों–टेंकरों की छाती पर
उगे–खेत, नदी, कारखाने
हवाई–जहाजों की उड़ानों से बरसाती
लोक–नृत्य, लोक–गीतों की
आदिवासी खुशियों के प्लास्टिक टुकड़े
मजदूरों की बस्ती के खूबसूरत नक्शे
और तमाम हवा–महल, हवाई–किले
हवाबाजों की मुट्ठियों से झरते झर–झर
धरती तक आते।"19

लोक विश्वास के विभिन्न बिंदुओं का विश्लेषण करने के पश्चात् कह सकते हैं कि यद्यपि मनुष्य 21वीं शताब्दी में रह रहा है लेकिन आज भी वही पुराने विश्वासों (अंध विश्वास) अपनाए हुए हैं। सुशिक्षित होकर भी अंधविश्वासों में डूबा हुआ है। अतः देवताले ने लोक जीवन में समाए रूढ़िगत परम्पराओं, अंधविश्वासों, जादू–टोने का वर्णन यथार्थ के स्थल पर चित्रित किया है।

2.0 मानवीय मूल्यों का बदलता स्वरूप

कोई भी देश या समाज अपनी मूल्य निष्ठा से अपने सांस्कृतिक प्रगति को अभिव्यक्त करता है। मूल्य निष्ठा का सामाजिक जीवन में विशेष महत्व है क्योंकि इसके आधार पर सामाजिक जीवन की आचार महिलाएँ तो बनती ही हैं साथ ही साथ यह सामाजिक सम्बन्धों और संस्कारों का स्वरूप भी निश्चित करती हैं। इसके कारण ही सामाजिक सदस्यों में चारित्रिक विकास होता है और उनमें सत्यनिष्ठा, न्यायप्रियता, मानवीयता, साहस, करूणा, त्याग जैसे गुणों को आत्मलोचन करने की प्रवृत्ति का संचार होता है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने में तारतम्यता, अपना परिष्कार एवं परिशोधन करता रहता है। मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत न्याय की रक्षा, श्रमनिष्ठा, त्याग की भावना, लोकमंगल की कामना, कर्त्तव्य परायणता, पर दुःख कातरता, परोपकार आदि घटक तत्व समाए होते हैं। इसमें निष्ठा भाव कारण एक आदर्श समाज की स्थापना की जा सकती है जिसके सम्बन्ध में शिवानी कहती है "जिस प्रकार दीपक की एक लौ अंधकार पर विजय प्राप्त कर लेती है, उसी प्रकार मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण मनुष्य सांख्यिक रूप में अल्प ही क्यों न हों ऐसे स्वस्थ समाज की स्थापना कर सकते हैं जिसमें दया, ममता, करूणा, सहानुभूति की स्त्रोतास्विनी कल–कल स्वर में बहती हो।"20

'सिर्फ खाली जगह नहीं है' नामक कविता में कवि ने लोगों में देश भक्ति के प्रति विमुखता दर्शाया है कि जिन महान साहसी शूरवीरों ने देश के लिए अपनी जान न्यौछावर की, आज उनको सिर्फ उनकी शहीदी दिवस पर ही स्मृत

किया जा रहा है या उस वक्त जब देश पर कोई आंच आई हो। लेकिन उनके जज्बों की सही अर्थों में वे विधवाएँ ही कदर करती हैं जिनके सुहाग देश के लिए कुर्बान हो गए हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"न बेटों को याद आती है
न बापों के दोस्तों को
न इन दोस्तों के हट्टे–कट्टे बेटों को
सिर्फ उनकी बूढ़ी विधवाएँ
याद करती रहती हैं उनके जज्बों को।"21

आधुनिक समय का व्यक्ति चाहे वह शासक हो या आम सामान्य मनुष्य हो, उसमें अर्थोजन और धन संचय करने की प्रवृत्ति आ गई है जिस कारण वह आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी बन गया है। इसके परिणामस्वरूप उसमें चारित्रिक दुर्बलता आना स्वाभाविक ही है। धनोपार्जन की लोलुपता ने मनुष्य को मनुष्य से तथा समाज से छिन्न–भिन्न कर दिया है जिसके प्रभाव से उसमें आपसी मेल–मिलाप की भावना खत्म हो चुकी है। आज समय की कमी को दर्शाते हुए मनुष्य सिर्फ औपचारिकता निभाने में ही धँसा हुआ है। वह कृत्रिम हंसी, तालियों की गूँज से संस्कृति के विकास को अग्रणी बताता है। 'साबुत कुछ नहीं बचा है' कविता में अपने देश भाषा, प्रेम और मौलिकता के प्रति भाव न रखने वाले मनुष्य के दिखावे को कवि ने चित्रित किया है–µ

"वे हमेशा कुछ दूसरी ही तरह की जरूरतों के तहत
एक–दूसरे के करीब आयेंगे
सोचते हुए साबुत कुछ भी नहीं बचा है
न भाषा, न देश, न स्वतंत्राता
फिर भी खुशी, जाहिर करेंगे–तोहफे देंगे–लेंगे
तालियाँ बजाने में कोताही नहीं बरती जाएगी
निजता और मौलिकता को
घोषित कर दिया जाएगा संदिग्ध।"22

देवताले ने 'जगहें' कविता के माध्यम से भारतीय लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति चेतना भाव अभिव्यक्ति किया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने अन्तःस्थ को टटोलना होगा, उसमें बसे मानवीय मूल्यों को पहचानना होगा क्योंकि सामाजिक मानवीय मूल्यों के कारण जहाँ समाज राम राज्य बन सकता है वहीं मूल्यों के पतन के कारण रावण लंका समान समाज का, संस्कृति का पतन भी हो सकता है। अतः मानवीय मूल्यों पर ही मनुष्य के जीवन की उमंग, उल्लास टिकी है–µ

"पर हमें जानना चाहिए
हम किस जगह हैं
उस जगह के दिल में
रोशनी है या अँधेरा"
और जगह हमें विलाप सौंपती है
या उसे बेहतर बनाने का सपना
क्योंकि भात खाना हो या प्रेम करना
बच्चों को खिलाना या फूलों को हँसाना
कोई जगह से बाहर कैसे जा सकता है।"23

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानवीय मूल्यों पर ही भारतीय संस्कृति का गौरवान्ति होना टिका है। मानवीय मूल्यों में निष्ठाभाव कारण जहाँ देश और संस्कृति का विकास होता है वहीं इनके हनन होने से देश व संस्कृति के पतन होने की अनिवार्यता भी बनी रहती है।

3.0 भूमण्डलीकरण बनाम संस्कृति के पतन का चित्रण

भूमण्डलीकरण अंग्रेजी के शब्द (Globalization) का हिन्दी रूपांतरण है जिसके अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय सहायता केन्द्र, मानव अधिकार आयोग, तकनीकी प्रगति, उदारीकरण, विश्वग्राम आदि का नाम सुमेकित हैं। डॉ. पी.के. प्रतिभा भूमण्डलीकरण के संदर्भ में विचार प्रस्तुत करते हैं कि "भूमण्डलीकरण का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा सारा भूमण्डल या सारा विश्व एकीकृत हो गया है। वह पूँजीवादी व्यवस्था से सम्बन्धित और आधुनिक प्रौद्योगिकी के अतः सूत्रों का तंत्र है। यह यूरोप का वह दृष्टिकोण है जिसमें शक्ति–सत्ता और गर्भित अर्थ–प्रणालियों के कई जटिल संदर्भ जैसे–वित्तीय पूँजी, आर्थिक उदारीकरण एवं निजीकरण, बाजारवाद, विश्वगाँव, रोजगारों पर हमला, कच्चे माल पर कब्जा, मुनाफाखोरी के भ्रष्ट फार्मूलों को ईजाद करना, खेती पर अधिकार के नये–नये हथकंडे, सूचना प्रौद्योगिकी में आई क्रान्ति, मल्टीमीडिया की सेक्सुआलिटी का देहवाद, नारी–देह की कीमत में अनाप–शनाप चीजों की वृद्धि, फैशन परेड के कल्चर का वर्चस्व आदि अनेक बातें निहित हैं।"24

'साँप–सीढ़ी का खेल' नामक कविता में कवि ने भूमण्डलीकरण कारण देश की सभ्यता एवं संस्कृति के हो रहे हनन का वर्णन इस प्रकार किया है–µ

"जमाने के साथ रहते आए थे जो
वे ही दोस्त एक दूसरे के हत्यारे होने के लिए

हुमस रहे थे
बुजुर्गों की आँखों में भी
सवाले पर दूसरी तर्ज में
उस धागे को किसने तोड़ दिया
और बारूद में डुबोकर
किसने सुलगा दिया तीज–त्यौहार।"25

विश्व के एकीकरण के प्रभाव से वर्तमान समय के समस्त मनुष्य की आँखों में एक नई चमक समाई देखी जा सकती है। उनको अपने सपनों को साकार करने की एक दिशा सी मिल गई प्रतीत होती है। लेकिन इसके प्रभाव ने समस्त मनुष्यों को स्वतंत्रता का समय विस्मृत करा कर अनुचित कार्यों की तरफ धक्का दे दिया है। परिणामस्वरूप धन की आड़ ने मनुष्य को देश का पतन करने की ओर कदम आगे बढ़ाने का रास्ता दिखा दिया, जिस कारण वह खाने–पीने की चीजों में मिलावटी और ब्रान्ड का हेर–फेर करने लगा। 'पन्द्रह अगस्त' कविता की पंक्तियाँ सिद्ध करती हैं–µ

"आजादी से थके लोगों को अब याद नहीं है
सफेद कबूतरों की उड़ानें
चमकदार और सुंदर होकर
चीजों में प्रवेश कर चुका है अँधेरा।"26

भूमण्डलीकरण होने से भारतीय लोगों को रोजगार मिलना सुलभ हो गया। रोजगार के लिए जनता को बड़े–बड़े शहरों एवं विदेशों आदि में भी जाना पड़ता है। इनका अपनी जमीन एवं देश के प्रति वही लगाव रहे या न रहे, धरती कभी भी इनके दूसरी जगह स्थानांतरित होने से विस्थापित नहीं होती। 'धरती' कविता में कवि ने धरती की महिमा का वर्णन किया है कि धरती मनुष्यों द्वारा किए जा रहे अनैतिक कामों जिनसे भारतीय गौरवान्ति संस्कृति को ठेस पहुँचे, को अनदेखा कर मनुष्य को बहुत कुछ अर्पण करती रहती है–µ

"पहुँच सकते हैं
धरती के किसी भी हिस्से में,
पर अपनी जमीन को
उखाड़कर हम कहीं नहीं ले जा सकते
किसी दूसरे आकाश के नीचे,
पुनर्वास होता है मनुष्य का
धरती पर,
पर धरती विस्थापित नहीं हुई
मनुष्यों से आज तक।"27

अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि भूमण्डलीकरण आज के समय में स्थितियों की विद्रूपता, बाजारवाद, वेदना ही नहीं है अपितु भविष्य की चिंता भी है। इसलिए वैश्वीकरण से मात्रा मानव कल्याण ही निहित होना चाहिए, इसके अतिरिक्त अन्य भाव इसमें समाहित नहीं होने चाहिए जिनसे भारतीय संस्कृति एवं देश को खतरा उत्पन्न हो।

4.0 आदर्शर्ववादी भारतीय संस्कृति का चित्रण

किसी भी देश की संस्कृति उस देश के लोगों और समाजों से मिलकर बनती है। देश में आदर्श समाज का संगठन करना प्रत्येक समाज का स्वप्न होता है। आदर्श समाज, समाज के उस रूप को कहा जाता है जिसमें रहने वाले प्रत्येक सदस्यों में अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति तन्मयता निष्ठा एवं जागरूकता हो। 'कम खुदा न थी परोसने वाली' कविता में कवि ने माँ के रूप में नारी को सर्वोच्च स्थान दिया है जिसमें दया, ममता, करूणा आदि की चिरपरिचित धारा सदैव प्रवाहित रहती है। भारतीय समाज में नारी परिवार के सभी सदस्यों को खाना खिलाने के बाद स्वयं खाना खाती हैं, लेकिन कभी खाना कम पड़ने पर कोई गिला–शिकवा नहीं करती जो उसके आदर्श रूप को दर्शाता है।µ

"माँ थी
सबके बाद खाने वाली
जिसके लिए दाल नहीं
देचकी में बची थी हलचल
चुल्लू–भर पानी की
और कटोरदान में भाफ के चन्द्रमा जैसी
रोटी की छाया थी।"28

संस्कृति का गौरवशाली होना केवल नारी के आदर्शवादी रूप पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि उन मजदूरों के आदर्श विचारों पर भी निर्भर करता है जो अपने हक कमाई ही खाना पसंद करते हैं। बेईमानी की कमाई उनके लिए बेकार है। 'मोचीराम की याद' कविता में मोची के काम पर प्रकाश डालते हुए देवताले ने आदर्शवादी संस्कृति को दर्शाना चाहा है कि इसका काम छोटा होने पर भी विचार बहुत ऊँचे हैं।

"कोशिश की मैंने वह पंजी रख ले
पर लौटा दिया दो का सिक्का उसने कहते–
बिन मेहनत के पैसे गुम या

उड़ जाते हैं अंकल।"29

इस प्रकार कवि देवताले की कविताओं में आज की भारतीय संस्कृति के आदर्शों की झलक मिलती है जिसके कारण भारत गरीब होते हुए भी सोने की चिड़िया कहलाता है।

5.0 पर्यार्वरण के प्रति चिन्तित भाव का चित्रण

वर्तमान में भौगोलिक पृष्ठभूमि में किसी भी क्षेत्रा के अंतर्गत पर्यावरण परिदृश्य एवं नियोजन एक महत्त्वपूर्ण विषय है। पर्यावरण मानव जीवन का आधार है जिसकी रचना मनुष्य के जन्म के कई वर्षों पूर्व ही हो गई थी। सामान्यतः किसी भी क्षेत्र के अन्तर्गत भौगोलिक तथ्य जैसे–जल, वायु, धरातल, मिट्टी, वन, झरने इत्यादि पर्यावरण परिदृश्य को निर्धारित करते हैं। डॉ. सी.एम. गंगवार एवं पुष्पा रानी गंगवार का पर्यावरण के बारे में कहना है कि "पर्यावरण वह परिवृत्ति है, जो मानव को चारों ओर से घेरे हुए हैं तथा उसके जीवन एवं क्रियाओं पर प्रभाव डालती हैं। यह परिवृत्ति तथा परिस्थितिक दशाएँ सम्मिलित होती हैं, जिनकी क्रियाएँ मानव–विकास को प्रभावित करती हैं। पृथ्वी के धरातल, उसकी समस्त प्राकृतिक दशाएँ, समस्त प्राकृतिक समाधान, भूमि, जल, पर्वत, मैदान, खनिज पदार्थ, वनस्पति एवं सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियाँ जो पृथ्वी पर विद्यमान होकर मानव जीवन को प्रभावित करती हैं। वे सभी भौगोलिक क्रियाएँ पर्यावरण के अंतर्गत आती हैं।"1 मानव का सम्पूर्ण जीवन पर्यावरण पर ही टिका हुआ है।

कवि चन्द्रकांत देवताले ने अपने काव्य संग्रह की कविताओं में आधुनिक मनुष्य द्वारा अपनी सुख–सुविधाओं को पाने के लिए प्रकृति से की जा रही छेड़छाड़ का वर्णन किया है। वर्तमान समय के मनुष्य में आज एक प्रमुख प्रवृत्ति पाई जा रही है वह हैµभोग वृति। प्रकृति के हरे–भरे होने से मनुष्य को दिन रोज उत्सव मनाने के समान लगते थे जो आज लुप्त हो गए हैंµ

"सूरज की तेज धूप पत्थरों को
कुरेद रही है
समुद्र का पानी पत्थरों को
थरथरा रहा है
ठण्डी हवा मुझे
बहुत दूर पहुँचा रही है
यहाँ कभी उत्सवों के दिन रात थे।"30

6.0 पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव

आज भारत की दशा ऐसी हो गई है कि मनुष्य धन कमाने के लिए अपने जिस्म तक का सौदा कर रहे हैं जो कि पाश्चात्य सभ्यता का बढ़ता प्रभाव ही है। 'चखकर देखो शब्द' नामक कविता में कवि ने उन भारतीय स्त्रियों एवं नारियों का वर्णन किया है जो पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कर, अश्लील विडियो को देखकर इससे मिलने वाली कीमत का फतूर दिमाग में बिठाकर भारत माता की लाज को बेलाज कर रही है। उदाहरण द्रष्टव्य है–µ

"कुत्तों को चटाने के लिए जिस्म
युवतियाँ और प्रौढ़ाएं
जयहिन्दी टॉकीज की गली में खड़ी हैं
भारतमाता लाज की सीढ़ियों पर
बेलाज हो रही है।"31

इसी प्रकार पाश्चात्य सभ्यता के प्रभावों से भारतीय सभ्यता के हो रहे पतन का वर्णन 'नकल के बारे में संक्षिप्त चिन्तन' करती है–µ

"हम बखूबी कर ही रहे हैं
और पश्चिम की नकल के सहारे
खोल ही देंगे इक्कीसवीं सदी का
सुनहरा द्वार।"32

आज भारत कितना भी विकासोन्मुख हो गया है, गौरवशाली संस्कृति और सभ्यता कारण प्रगति कर रहा है लेकिन आज कहीं न कहीं भारतीय मनुष्यों में अपने देश की सभ्यता को विस्मृत कर पश्चिमी देशों की सभ्यता को अपनाने की लालसा उठा रही है। इसी कारण भारत देश के पूर्णतः विकसित होने में कहीं कमी नजर आ रही है। 'वसन्त' कविता के माध्यम से कवि ने विदेशी सभ्यता को अनुसरण करने से देश के पतनोन्मुख होने का दृश्य इस प्रकार दिखलाया है–µ

"अखबार के मुखपृष्ठ पर तो कुछ भी नहीं
उससे अच्छा कहीं ज्यादह कहता गया
जिस पर लदे ताजे टटके–मटके
जा रहे बिकने हाट में.....
मटकों की त्वचा पर आँच की चमक है शेष

उड़ती हुई धूल के बीच।"33

इस प्रकार कह सकते हैं कि वर्तमान समय में भारतीय सभ्यता पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है जिसके प्रभाववश भारतीय संस्कृति का पतन होना आरम्भ हो गया है।

7.0 सांस्कृतिक विविधता में एकता का चित्रण

प्रत्येक देश के अपने बहुसंख्या में राज्य होते हैं जिनमें विभिन्न धर्म, व्यवसाय, जाति इत्यादि के लोग रहते हैं। इनकी भाषा तथा संस्कृति, लोक–विश्वास तथा रीति–रिवाज और रहन–सहन में काफी विभिन्नता पाई जाती है। भारत जैसे विशाल देश की भी यही स्थिति है जिसके विभिन्न राज्यों की अपनी रस्में तथा रहन–सहन के तरीके अलग–अलग हैं। कवि चन्द्रकांत देवताले ने अपनी कविताओं में विभिन्न राज्यों के लोगों के रहन–सहन, उनकी आवश्यकताओं का वर्णन कुछेक कविताओं में ही किया है। 'नींबू माँगकर' नामक कविता में कवि ने दो स्थानों की सांस्कृतिक विभिन्नता को अनुभव के धरातल पर अभिव्यक्त किया है। कवि ने इंदौर और उज्जैन के धरातल के निवासी मनुष्य के रहने के परिप्रेक्ष्य में बताया है कि उज्जैन में जहाँ एक दूसरे से वस्तुएं मांगकर खा ली जाती हैं, वहीं इंदौर में किसी से कोई भी वस्तु माँगने का रिवाज नहीं है। देवताले ने स्पष्ट किया है–

"कमा ने बताया यह वाकया
वही से वह बड़बड़ाई
वहाँ माँगा–देही का रिवाज नहीं
समझाया था पहले ही
फिर भी तुम बाज नहीं आए आदत से अपनी
वहाँ इंदौर में नींबू मांगकर तुमने
यहाँ उज्जैन में मेरी नाक कटवा ही दी।"34

इस प्रकार भारत में विभिन्न राज्यों के लोगों के जीने का तरीका भी भिन्न–भिन्न प्रकार से होता है जिनसे संस्कृति में भी विभिन्नता की झलक दिखाई देती है फिर भी भारत एकता के सूत्रा में बँधा हुआ है।

8.0 सांस्कृतिक विघटन का चित्रण

कवि ने समाज में फैले उन तमाम अपराधों को भी प्रकाश में लाना चाहा है जो रोज मनुष्य के जीवन में घटित हो रहे हैं, लेकिन वह स्वयं उनसे अनभिज्ञ हैं। देश के उच्चाधिकारी द्वारा आज भारतीय संस्कृति का विघटन किया जा रहा है जिसकी मुख्य उदाहरण उनकी देश को विकसित करने की नीतियाँ होती हैं। मनुष्य के विकास के नाम पर उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर उनका शोषण (शारीरिक व मानसिक) करना इनका प्रमुख मंतव्य रहता है। 'कवितांत के अँधेरे में' देवताले ने कविता में सत्तासीन अधिकारियों द्वारा श्रमिक वर्ग को काम पर लगाकर उनके भोग विलास व मनोरंजन करने का वर्णन इस प्रकार किया हैμ

"तुम सड़क बनाओ
और ट्रान्जिस्टर बनाओ
वह वहाँ रंडियों के बाज़ार में
औरतों की कलाईयाँ दबाते हुए
चूड़ियाँ पिन्हाता रहेगा।"35

नारी के विभिन्न रूपों और उनके मानसिक रहस्यों के विषय में बताते हुए कवि कहता है कि वर्तमान समय की नारी के अर्न्तमन को कोई भी नहीं जान सकता। इनकी चेहरे की नकली खूबसूरती के पीछे बहुत बड़ा राज छिपा होता है जिससे ये अपना कार्य सिद्ध करती हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है–μ

"कोई भी औरत जिसकी नदी में
एक से ज्यादह नावें चलती हों
और जो अहिस्ता भी हँसे तो
भीतर की हड्डियाँ तड़कने लगा जाए.....।"36

इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में ही भारतीय लोगों की अस्मिता छिपी होती है। इसके गौरवानशील होने से मनुष्य का गौरव तथा पतनोन्मुख होने से इसका जीवन भी पतन की ओर मुड़ जाता है।

9.0 प्रकृति प्रेम का चित्रण

मनुष्य को प्रेम के रंगों में रंगने के लिए 'पेड़' नामक कविता में कवि ने पेड़ की महिमा का बखान इस प्रकार किया है–μ

"आदमी बौना नहीं लगे
इसलिए पेड़ अपनी टहनियों को झुका देते हैं
और बच्चों को फल
स्त्रियों को फूल
और चाहने पर प्रेम के लिए
छाँह के अलावा

थोड़ी–सी आड़ भी देते हैं।"37

ग्रीष्म ऋतु की महानता को दर्शाते हुए कविवर ग्रीष्म ऋतु को धरती के घाव का उपचार करने वाली मानते हैं क्योंकि उक्त ऋतु में पेड़ों की नई कोंपलें फूट आती हैं, पेड़ का जीवन पुनः सजीव हो उठता है। 'ग्रीष्म के पास' कविता के उदाहरण से स्पष्ट है–µ

"ग्रीष्म के पास नीम की ताज़ा पत्तियाँ हैं
खाकर प्रेम के पहाड़ पर चढ़ जाओ
ग्रीष्म के पास तमतमाते सूरज का नश्तर है
पृथ्वी के घाव का उपचार।"38

इस प्रकार प्रकृति के इन सजीव और रमणीय चित्रों से देवताले ने मनुष्य और प्रकृति के आपसी प्रेम, इनके सौन्दर्य बोध और आत्मिक शांति का बोध कराया है।

10.0 पीढ़ीगत अंतराल का चित्रण

मनुष्य आज कम्प्यूटर के युग में जी रहा है जिसमें प्रत्येक काम कम्प्यूटर के माध्यम से हो रहा है। कोई भी ऐसा क्षेत्रा शेष नहीं जहाँ कम्प्यूटर का उपयोग न हो रहा हो। संगणक के जमाने में मानव आज स्वयं कम्प्यूटर चालित मशीन समान बन गया है। उसका मस्तिष्क तो है लेकिन उसमें प्राचीन समय जैसी भावनाएँ विद्यमान नहीं हैं। 'चकमक पत्थर' कविता में प्राचीन समय और आज के कम्प्यूटरीकरण जमाने के अंतराल को प्रकट करती है कि प्राचीन समय के मनुष्यों के अंदर बसन्त रूपी उल्लास, आपसी प्यार और अपनापन था, वहीं आज के मनुष्य में यह सब देखना असम्भव सा प्रतीत हो रहा है–µ

"अब तो मस्तिष्क है कम्प्यूटर के पास भी
कविता लिख देगा कम्प्यूटर एक दिन
पर क्या बसन्त
या चिड़िया
अथवा स्तनों से झरता–झरना
संभव है कभी कम्प्यूटर के गर्भ से भी।"39

प्राचीन और आधुनिक परिवेश के मनुष्य के व्यवसाय के विषय में सोचें तो पहले समय में मनुष्य हस्तकला के माध्यम से अपनी आजीविका कमाता था और अपने ही शहर में रहकर भारतीय संस्कृति का विकास कर आनंद उठाता था। 'कम्प्यूटर महिला के सामने'40 कविता की पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं–µ

"उन्हें याद नहीं होगा सन् पैंतालीस का अँधेरा
इस बयासी की आत्मा को लड़खड़ाती रोशनी में
पाँव रखने के लिए जमीन ढूँढ़ते हुए
अपने जंगलों और नदियों के बिना हजारों लोग
पराजित किसी–न–किसी दृश्य या अदृश्य कम्प्यूटर से
भटक रहे होंगे आज
पता नहीं कहाँ–कहाँ?"41

11.0 निष्कर्ष

इस प्रकार समग्र रूप से कह सकते हैं कि चन्द्रकांत देवताले ने नई और पुरानी पीढ़ी के लोगों का सामाजिक धरातल पर चित्राण किया है जिसमें समाज की लोक संस्कृति में लोक जीवन का बहुत ही यथार्थ रूप में कवि ने चित्राण किया है। खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, तीज त्यौहार, जादू टोना, अंधविश्वास आदि के साथ–साथ बदलते मानवीय मूल्य, पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदना, पाश्चात्य सभ्यता ने अपने पाँव धीरे–धीरे जमा लिए हैं। कवि बड़े दुःखी मन से अपनी बात कविता में कहता है। हमारी संस्कृति दिन–प्रतिदिन नष्ट होती जा रही है जिसका एक दिन बहुत बड़ा पश्चाताप होगा।

12.0 संदर्भ :

1. चन्द्रकांत देवताले, भूखंड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृ. 23
2. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2010), पृष्ठ 91
3. चन्द्रकांत देवताले, आग हर चीज में बताई गई थी, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987), पृष्ठ 24
4. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 28
5. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2012), पृष्ठ 83
6. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 24
7. चन्द्रकांत देवताले, रोशनी के मैदान की तरफ, (दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1982), पृष्ठ 50
8. चन्द्रकांत देवताले, आग हर चीज में बताई गई थी, (दिल्ली :राजकमल प्रकाशन, 1987), पृष्ठ 24
9. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2010), पृ. 36
10. चन्द्रकांत देवताले, आग हर चीज में बताई गई थी, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987), पृष्ठ 27
11. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 15

12. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृ. 72
13. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 15
14. वही, दीवारों पर खून से, (दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1975), पृष्ठ 70
15. अर्चना गौतम, शिवानी के उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना, (दिल्लीः कुनाल प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 329
16. चन्द्रकांत देवताले, उजाड़ में संग्रहालय, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 79
17. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2010), पृष्ठ 25
18. चन्द्रकांत देवताले, उजाड़ में संग्रहालय, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 46
19. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 63
20. उद्धृत अर्चना गौतम, शिवानी के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना, (दिल्ली : कुनाल प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 247
21. चन्द्रकांत देवताले, रोशनी के मैदान की तरफ, (दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1982), पृष्ठ 55
22. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2010), पृष्ठ 121
23. चन्द्रकांत देवताले, लकड़बग्घा हँस रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 77
24. उद्धृत भूमण्डलीकरण और हिन्दी कविता, बाबू जोसफ (संपा), (कानपुरः अमन प्रकाशन, 2013), पृष्ठ 163–164
25. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 28–29
26. चन्द्रकांत देवताले, उजाड़ में संग्रहालय, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 20
27. चन्द्रकांत देवताले, आग हर चीज में बताई गई थी, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987), पृष्ठ 11
28. चन्द्रकांत देवताले, उजाड़ में संग्रहालय, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2003), पृष्ठ 77
29. चन्द्रकांत देवताले, पत्थर फेंक रहा हूँ, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 31
30. पर्यावरण संरक्षण प्रबंधन एवं नीतियाँ, सी.एम. गंगवार तथा अन्य (संपा), (बिजनौर : हिन्दी साहित्य निकेतन, 2006), पृष्ठ 206
31. चन्द्रकांत देवताले, लकड़बग्घा हँस रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 51
32. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृ. 39
33. चन्द्रकांत देवताले, खुद पर निगरानी का वक्त, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2015), पृष्ठ 81
34. चन्द्रकांत देवताले, लकड़बग्घा हँस रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 23
35. चन्द्रकांत देवताले, उजाड़ में संग्रहालय, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 96–97
36. चन्द्रकांत देवताले, दीवारों पर खून से, (दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1975), पृष्ठ 12
37. वही, पृष्ठ 33
38. चन्द्रकांत देवताले, लकड़बग्घा हँस रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 75
39. चन्द्रकांत देवताले, इतनी पत्थर रोशनी, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2002), पृष्ठ 9
40. चन्द्रकांत देवताले, भूखण्ड तप रहा है, (दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2000), पृष्ठ 14–15
41. चन्द्रकांत देवताले, आग हर चीज में बताई गई थी, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987), पृष्ठ 82–83